मध्यप्रदेश के स्थापना तिथि के उपलक्ष्य में प्रकाशित विशेषांक

मध्यप्रदेश जैव प्रौद्योगिकी परिषद का त्रैमासिक न्यूज लेटर


# जैव प्रौद्योगिकी


अंक-03 | वर्ष-01 | नवम्बर-2007


## संपादकीय

यह बात सर्वविदित है कि 20 वीं शताब्दी के अंत में सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति ने रोजगार के अपार अवसर निर्मित किए तथा देश के विद्यार्थियों ने सिलिकॉन वैली तक में अभूतपूर्व पहचान बनाई। वर्तमान युग जैव प्रौद्योगिकी का युग माना जा रहा है। जैव प्रौद्योगिकी का सफल उपयोग करते हुए उद्योग ने वर्ष 2006-07 में 31 % वृद्धि दर प्रदर्शित की है। यह वृद्धि दर आने वाले वर्षो में जैव प्रौद्योगिकी की बढ़ती संभावनाओं को इंगित करता है।

प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने हेतु इसकी शिक्षा की व्यापकता एवं गुणवत्ता प्रदान करना अनिवार्य हो गया है। इसी संदर्भ में जैव प्रौद्योगिकी शिक्षा में प्रदेश में एकत्रित आकड़ों के आधार पर पाया गया कि प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर उपाधि पश्चात् अनुसंधान, शिक्षण अथवा उद्योगों में 61 % छात्र कार्यरत् है, किन्तु 39 % विद्यार्थी ऐसे हैं जो जैव प्रौद्योगिकी विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के पश्चात अन्य क्षेत्र का चयन कर लेते हैं। आवश्यकता है कि स्नातकोत्तर कक्षा तक प्रशिक्षित मानव संसाधन को जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में ही कार्य करने का अवसर उपलब्ध हो। यह संभव है जब जैव प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप पाठ्यक्रम सृजित किए जाएं ताकि प्रदेश के विद्यार्थी रोजगार के लिए मजबूती से कदम रख सकें।

हमारे राज्य की स्थापना तिथि के उपलक्ष्य में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुआयामी विकास की प्रतिबद्धता तथा प्रदेश को राष्ट्र-विश्व में एक नये स्तर पर स्थापित करने के संकल्प के साथ यह "अंक" प्रस्तुत है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी
म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद भोपाल


संरक्षक
श्रीमती रंजना चौधरी
अपर मुख्य सचिव,
म.प्र. शासन, जैव विविधता एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग
भोपाल

संपादक
श्री आर.बी. सिन्हा
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
मध्यप्रदेश जैव प्रौद्योगिकी परिषद
भोपाल

सह संपादक
डॉ. (श्रीमती) मोनी माथुर
सलाहकार

संपादक मंडल
डॉ. रवि उपाध्याय
श्री नित्यानंद श्रीवास्तव



जैव विविधता एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग

**मध्यप्रदेश जैव प्रौद्योगिकी परिषद**

26, किसान भवन, तृतीयतल, जेलरोड अरेराहिल्स, भोपाल-462011 (म.प्र.)
फोन-0755.2577185-186 फैक्स- 0755-2577187
e- mail-mpbiotechcouncil@rediffmail.com
website:www.mpbiotech.org

जैव प्रौद्योगिकी का उदगम आधारी जीव विज्ञान के अनुसंधान से उत्पन्न विचारों और परिणामों के अनुप्रयोगों से हुआ लेकिन आज इस तकनीक का उपयोग कृषि, चिकित्सा, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा, खनन, गैर पारम्परिक उर्जा उत्पादन एवं दवा बनाने के उद्योगों में किया जा रहा है। यद्यपि जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग की सूची बहुत बड़ी है, किन्तु जैव प्रौद्योगिकी आधारित उद्योग मुख्यतः पांच प्रकार के हैं, बायोफार्मा, बायोएग्री, बायो इण्डस्ट्री, बायो सर्विस, बायो इन्फरमेटिक्स।

वर्ष 2006-07 में भारत में जैव प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों ने 30.9 % की दर से प्रगति की है एवं 8541 करोड़ रूपये मूल्य का राजस्व प्राप्त किया, जिससे सर्वाधिक प्रगति की दर 54.3 % एग्री बायो क्षेत्र में रही तथा बायो फार्मा उद्योग का सर्वाधिक योगदान 5973 करोड़ रूपये रहा है। ** स्त्रोत (बायो स्पेक्ट्रम - जून, 2007)

## जैव प्रौद्योगिकी शिक्षा उपरांत रोजगार के अवसर

वर्तमान में देश के विभिन्न जैव प्रौद्योगिकी उद्योगों में 23000 प्रशिक्षित लोग कार्यरत् हैं, जिनकी 2008-09 तक 60000 तक पहुंचने की संभावना है। " स्त्रोत (बायो स्पेक्ट्रम - जून, 2007) प्रदेश में किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार जैव प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर शिक्षा उपरांत 26 % छात्र शोध कार्य कर रहे हैं। 20.5 % छात्र शिक्षण कार्य में संलग्न है एवं 1.5 % विदेश में उच्च अध्ययन हेतु चले जाते हैं। केवल 12 % छात्र ही विभिन्न जैव प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों में रोजगार प्राप्त कर पाते हैं। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि उद्योग जगत के लिये उपयोगी जैव प्रौद्योगिकी शिक्षा की आवश्यकता है।

1. Students going abroad-1.5%
2. Students opting for teaching-20.12%
3. Students absorbed in industries-12.69%
4. Students going for research-26.3%
5. Students going for other jobs-39.31%

**Placement of students of Biotechnology from M.P.**

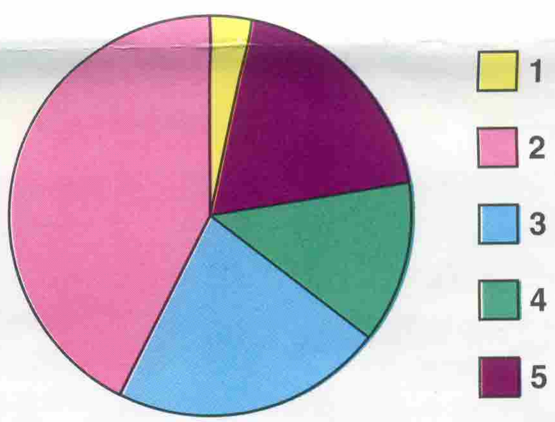


## हमारे नये उपाध्यक्ष-सह-मान. मंत्री जी

प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिये कुशल मार्गदर्शक एम.बी.बी.एस. की डिग्री हासिल किये हुए माननीय मंत्री जी, डॉ. गौरीशंकर शेजवार को जैव विविधता एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग सौंपा गया है। डॉ. शेजवार के नेतृत्व में प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। परिषद की ओर से अनेकानेक बधाईयाँ